Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 5, Issue 3&4 - 2020, Pg. No. 9-12
Peer Reviewed Journal

Research Article

साहित्यिक कृतियों के सन्दर्भ में अनुवाद

चिलुका पुष्पलता

हिंदी विभाग, माउंट कार्मल कॉलेज औटानोमोउस, बेंगलुरु, कर्नाटक, भारत।

DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202009

I N F O

E-mail Id:
chilukapuspa@yahoo.co.in
Orcid Id:
https://orcid.org/0000-0002-4006-0222

Date of Submission: 2020-11-01
Date ofAcceptance: 2020-12-11

सारांश

भारत में अनुवाद की परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। कहते हैं अनुवाद उतना ही प्राचीन जितनी कि भाषा। आज 'अनुवाद' शब्द हमारे लिए कोई नया शब्द नहीं है। विभिन्न भाषायी मंच पर, साहित्यिक पत्रिकाओं में, अखबारों में तथा रोजमर्रा के जीवन में हमें अक्सर 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग देखने–सुनने को मिलता है। साधारणतः एक भाषा–पाठ में निहित अर्थ या संदेश को दूसरे भाषा–पाठ में यथावत् व्यक्त करना अर्थात् एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहना अनुवाद है। परंतु यहतज कार्य उतना आसान नहीं, जितना कहने या सुनने में जान पड़ रहा है। दूसरा, अनुवाद सिद्धांत की चर्चा करना और व्यावहारिक अनुवाद करना–दो भिन्न प्रदेशों से गुजरने जैसा है, फिर भी इसमें कोई दो राय नहीं कि अनुवाद के सिद्धांत हमें अनुवाद कर्म की जटिलताओं से परिचित कराते हैं। फिर, किसी भी भाषा के साहित्य में और ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में जितना महत्त्व मूल लेखन का है, उससे कम महत्त्व अनुवाद का नहीं है। लेकिन सहज और संप्रेषणीय अनुवाद मूल लेखन से भी कठिन काम है। भारत जैसे बहुभाषी देश के लिए अनुवाद की समस्या और भी महत्त्वपूर्ण है। इसकी जटिलता को समझना अपने आप में बहुत बड़ी समस्या है।

मुख्य बिन्दु: बौरान साहित्यि, न्यायाधीश हिंदी, प्रतिबिम्बित, दूरदर्शन

भूमिका

अनुवाद दशा में पहला सार्थक प्रयास एच. एच. विल्सन ने 1855 में 'ग्लोरी ऑफ ज्यूडिषियल एंड रेवेन्यू टर्म्स' के द्वारा किया। सन् 1961 में राजभाषा विधायी आयोग की स्थापना हुई। इसका काम अखिल भारतीय मानक विधि शब्दावली तैयार करना था। 1970 में विधि शब्दावली का प्रकाषन हुआ। इसका परिवर्धन होता आ रहा हे। इसका नवीन संस्करण 1984 में निकला। इस आयोग ने कानून संबंधी अनेक ग्रंथो का अनुवाद किया हे। कई न्यायालयों में न्यायाधीष हिंदी में भी निर्णय देने लगे है। अनुवाद संबंधी सिद्धांतों पर स्वतंत्र ग्रंथों का लेखन वस्तुत बीसवी शताब्दी में प्रारंभ हुवा। इसी शताब्दी के बौरान साहित्यिक और भाषा वैज्ञानिक पत्रिकाओं में अनुवाद पर लेखों का प्रकाषन प्रारंभ हुआ। इन्हीं भाषा वैज्ञानिक एवं साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं में अनुवाद की कई परिभाषाओं को जन्म दिया। कई परिभाषाओं पर सवाल भी उठाए गए तो कुछ परिभाषाओं को मान्यताएं भी मिली लेकिन आज भी अनुवाद की कोई एक परिभाषा नहीं मिलती है। परिभाषाओं पर विचार किया जाए तो अनुवाद की परिभाषा भाषा वैज्ञानिकों ने भी दी है और साहित्यकारों (कवियों) ने भी दी है।भारतीय अनुवाद सिधांतकारों ने भी अनुवाद की परिभाषा दी है।

भोलानाथ तिवारीः– भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है व्हीं प्रतिकों का प्रतिस्थापन, अर्थात एक भाषा के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम (कथनतः और कथ्यतः) समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग। इस प्रकार अनुवाद निकटतम, समतुल्य और सहज प्रतिप्रतीकन है।

पट्टनायकः– "अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सार्थक अनुभव (अर्थपूर्ण संदेश या संदेश का अर्थ) को एक भाषा–समुदाय से दूसरे भाषा समुदाय में संप्रेशित किया जाता है।"

गार्गी गुप्तः– "अनुवाद प्रक्रिया के दो मुख्य अंग होते हैं। अर्थबोध और व्याकरण सम्मत भाषा में स्पष्ट संप्रेशण। इसीलिए अनुवाद की निश्ठा दोवुखी होती है, मूल रचनाकर के प्रति अर्थबोध की दृष्टि से और पाठक के प्रति षुद्ध तठा सुबोध संप्रेशण की दृष्टि से। मूल

Copyright (c) 2020: Advanced Research Publications

हचना की जो संकल्पनाएँ अथवा स्थितियाँ औदित रचना के पाठक के लिए अज्ञात अस्पष्ट या दुऋह हों, उनकी व्याख्या, स्पष्टीकरण, अंतर्संबंधों का विवरण देना अत्यावश्यक है। यदि हम पाथक की वुल रचना की मनोहारी भूमि में संदेह ले जाना चाहते हैं तो उसका वह मनोहर स्वरुप यथावत उसके मन में भी प्रतिबिम्बित होना चाहिए।"

NIDA:- Translation consists in producing in the receptor language the close natural equivalent to the massage of the source language first in meaning and secondly in style.

नाइडाः– "अनुवाद का संबंध स्त्रोत भाषा के सम्देश का पहले अर्थ और फिर शैली के धरातल पर लक्ष्य भाषा के द्न्कटतम, स्वाभाविक तथा तुल्यार्थक उपादान प्रस्तुत करने से होता है।"

अनुवाद के कुछ अन्य प्रभेद

शब्दानुवाद

स्रोत–भाषा के शब्द एवं शब्द क्रम को उसी प्रकार लक्ष्य–भाषा में रूपान्तरित करना शब्दानुवाद कहलाता है। यहाँ अनुवादक का लक्ष्य मूल–भाषा के विचारों को रूपान्तरित करने से अधिक शब्दों का यथावत् अनुवाद करने से होता है। शब्द एवं शब्द क्रम की प्रकृति हर भाषा में भिन्न होती है। अतः यांत्रिक ढंग से उनका यथावत अनुवाद करते जाना काफी कृत्रिम, दुर्बोध्य एवं निश्प्राण हो सकता है। शब्दानुवाद उच्च कोटि के अनुवाद की श्रेणी में नहीं आता।

भावानुवाद

साहित्यिक कृतियों के सन्दर्भ में भावानुवाद का विषेश महत्त्व होता है। इस प्रकार के अनुवाद में मूल–भाषा के भावों, विचारों एवं सन्देशों को लक्ष्य–भाषा में रूपान्तरित किया जाता है। इस सन्दर्भ में भोलानाथ तिवारी का कहना हैः 'मूल सामग्री यदि सूक्ष्म भावों वाली है तो उसका भावानुवाद करते हैं।' भावानुवाद में सम्प्रेशणीयता सबसे महत्त्वपूर्ण होती है। इसमें अनुवादक का लक्ष्य स्रोत–भाषा में अभिव्यक्त भावों, विचारों एवं अर्थों का लक्ष्य–भाषा में अन्तरण करना होता है। संस्कृत साहित्य में लिखे गए कुछ ललित निबन्धों के हिन्दी अनुवाद बहुत ही सफल सिद्ध हुए हैं।

छायानुवाद

अनुवाद सिद्धान्त में छाया शब्द का प्रयोग अति प्राचीन है। इसमें मूल–पाठ की अर्थ छाया को ग्रहण कर अनुवाद किया जाता है। छायानुवाद में शब्दों, भावों तथा संकल्पनाओं के संकलित प्रभाव को लक्ष्य–भाषा में रूपान्तरित किया जाता है। संस्कृत में लिखे गए भास के नाटक 'स्वप्रनवासवदत्तम' एवं कालिदास के नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम' के हिन्दी अनुवाद इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

सारानुवाद

सारानुवाद का अर्थ होता है किसी भी विस्तृत विचार अथवा सामग्री का संक्षेप में अनुवाद प्रस्तुत करना। लम्बी रचनाओं, राजनैतिक भाषणों, प्रतिवेदनों आदि व्यावहारिक कार्य के अनुवाद के लिए सारानुवाद काफी उपयोगी सिद्ध होता है। इस प्रकार के अनुवाद में मूल–भाषा के कथ्य को सुरक्षित रखते हुए लक्ष्य–भाषा में उसका रूपान्तरण कर दिया जाता है। सारानुवाद का प्रयोग मुख्यतः दुभाषिये, समाचार पत्रों एवं दूरदर्षन के संवाददाता तथा संसद एवं विधान मण्डलों के रिकार्डकर्त्ता करते हैं।

व्याख्यानुवाद

व्याख्यानुवाद को भाष्यानुवाद भी कहते हैं। इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक मूल सामग्री के साथ–साथ उसकी व्याख्या भी प्रस्तुत करता है। व्याख्यानुवाद में अनुवादक का व्यक्तित्व महत्त्वपूर्ण होता है। और कई जगहों में तो अनुवादक का व्यक्तित्व एवं विचार मूल रचना पर हावी हो जाता है। बाल गंगाधर तिलक द्वारा किया गया 'गीता' का अनुवाद इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

आशु अनुवाद

आशु अनुवाद को वार्तानुवाद भी कहते हैं। दो भिन्न भाषाओं, भावों एवं विचारों का तात्कालिक अनुवाद आषु अनुवाद कहलाता है। आज जैसे विभिन्न देश एक दूसरे के परस्पर समीप आ रहे हैं इस प्रकार के तात्कालिक अनुवाद का महत्त्व बढ़ रहा है। विभिन्न भाषा–भाषी प्रदेशों एवं देशों के बीच राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व के क्षेत्रों में आषु अनुवाद का सहारा लिया जाता है।

आदर्ष अनुवाद

आदर्ष अनुवाद को सटीक अनुवाद भी कहा जाता है। इसमें अनुवादक आचार्य की भूमिका निभाता है तथा स्रोत–भाषा की मूल सामग्री का अनुवाद अर्थ एवं अभिव्यक्ति सहित लक्ष्य–भाषा में निकटतम एवं स्वाभाविक समानार्थों द्वारा करता है। आदर्ष अनुवाद में अनुवादक तटस्थ रहता है तथा उसके भावों एवं विचारों की छाया अनूदित सामग्री पर नहीं पड़ती। रामचरितमानस, भगवद्गीता, कुरआन आदि धार्मिक ग्रन्थों के सटीक अनुवाद इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

रूपान्तरण

आधुनिक युग में रूपान्तरण का महत्त्व बढ़ रहा है। रूपान्तरण में स्रोत–भाषा की किसी रचना का अन्य विधा (साहित्य रूप) में रूपान्तरण कर दिया जाता है। संचार माध्यमों के बढ़ते हुए प्रभाव एवं उसकी लोकप्रियता को देखते हुए कविता, कहानी आदि साहित्य रूपों का नाट्यानुवाद विशेष रूप से प्रचलित हो रहा है। ऐसे अनुवादों में अनुवादक की अपनी रुचि एवं कृति की लोकप्रियता महत्त्वपूर्ण होती है। जैनेन्द्र, कमलेश्वर, अमृता प्रीतम, भीष्म साहनी आदि की कहानियों के रेडियो रूपान्तर प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 'कामायनी' महाकाव्य का नाट्य रूपान्तर काफी चर्चित हुआ है।

अनुवाद का वैज्ञानिक पक्ष

विज्ञान का साधारण अर्थ होता है 'विशिष्ट ज्ञान'। मगर आज 'विज्ञान' शब्द केवल 'विशिष्ट ज्ञान' तक सीमित न रह कर समूचे वैज्ञानिक व तकनीक चिन्तन, अनुशासनों, यथा– भौतिकी, रसायन, गणित, जीवविज्ञान, कम्प्यूटर आदि को अपने में समाहित कर चुका है जिसमें पूर्ण सार्वभौमिक सत्यता (universal truth) विद्यमान होती है। इसे सार्वभौमिक सत्यता इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह सामान्यतः स्थान, समय व परिवश से प्रभावित नहीं होती। इसमें हमेसा 2+2=4 या H2+0=H20 होता है। परन्तु अनुवाद में ऐसी सार्वभौमिक सत्यता नहीं होती। हर अनुवादक से उसे एक नया रूप मिलता है। फिर

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202009

अनुवाद में अनिवार्यतः अनुवादक के युग, समाज, भौगोलिक परिवेश आदि का प्रभाव भी मौजूद रहता है।

अनुवाद का कला पक्ष

कला एक प्रकार की सर्जना (बतमंजपवद) है। शायद यही कारण है कि सृजनात्मक साहित्य को कला की श्रेणी में रखा जाता है। जब सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद किया जाता है तो वह मात्र षाब्दिक प्रतिस्थापन नहीं होता बल्कि अनुवादक को मूल लेखक के उस महान् जीवन क्षण को फिर से जीना होता है जिससे अभिभूत होकर कवि या रचनाकार ने उस रचना को अंजाम दिया। इसलिए आग्निस गेर्गली ने कहा है: Translation must find and reproduce the impulse of the original work. हमशा सहज समतुल्यता की खोज में अनुवादक को अक्सर पुनःसृजन करना पड़ता है, जिसमें अनुवादक के सौन्दर्यबोध एवं सृजनशील प्रतिभा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शैली के शब्दों में कहें तो सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद एक प्रकार से कलात्मक प्रक्रिया है।

अनुवाद का शिल्प पक्ष

कई भाषाविज्ञानियों का मानना है कि अनुवाद–कार्य एक शिल्प–कर्म है। उनका तर्क है कि स्रोत–भाषा में व्यक्त सन्देश को लक्ष्य–भाषा में प्रस्तुत करने में अनुवादक के कौषल, उसके भाषा–चातुर्य की अहम् भूमिका होती है। यह शिल्प शब्द अंग्रेजी के skill व craft के निकट पड़ता है। न्यूमार्क ने अनुवाद कर्म को 'शिल्प' स्वीकारा है: 'अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में लिखित सन्देश को दूसरी भाषा में उसी सन्देश को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है।' फिर अनुवाद में जितना अधिक अभ्यास किया जाएगा या प्रशिक्षण लिया जाएगा, अनुवाद उतना ही सुन्दर होता जाएगा। इसके अलावा कला और शिल्प का अभिन्न सम्बन्ध भी रहा है।

अनुवाद में कला–विज्ञान–शिल्प के तीनों तत्त्व

नाइडा द्वारा प्रस्तावित अनुवाद प्रक्रिया में तीन सोपानों का उल्लेख है:

विष्लेशण, अन्तरण, पुनर्गठन

दरअसल ये तीनों चरण क्रमानुसार विज्ञान, शिल्प और कला के ही तीनों सोपान हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अनुवाद–प्रक्रिया का पहला चरण है मूल–पाठ का 'वैज्ञानिक विष्लेशण', दूसरा सोपान है मूल–पाठ के सन्देश व शिल्प का 'अन्तरण कौशल' तथा तीसरा सोपान है लक्ष्य–भाषा में उसका 'कलात्मक पुनर्ग्ाठन'। मगर अनुवाद में ये तीनों (कला, विज्ञान और कौषल) का अनुपात सदैव समान नहीं रहता। इन तीनों का अनुपात अनुद्य सामग्री की प्रकृति पर निर्भर रहता है। सृजनात्मक सामग्री में कला तत्त्व का प्राधान्य होने के कारण इसके अनुवादक में भी सृजनात्मक प्रतिभा का होना अपरिहार्य माना गया है। यही कारण है कि साहित्यिक अनुवादक अनुवाद को कलात्मक क्रिया मानते आए हैं। इसके विपरीत तकनीकी या वैज्ञानिक सामग्री के अनुवादक को अनुद्य विषय का सम्यक ज्ञान होना जरूरी है। अनुवादक का विषय ज्ञान जितना अधिक होगा अनुवाद उतना सटीक होगा। अन्यथा 'woody portion' का अनुवाद 'काष्ठमय अंष' हो जाने में देर नहीं लगती। इसके अलावा तकनीकी–वैज्ञानिक सामग्री के अनुवाद में हमें कुछ नियमों का अनुसरण भी करना पड़ता है। इसीलिए तकनीकी विषय के अनुवाद में अनुवादक का कौषल बखूबी काम करता है। इस सन्दर्भ में नाइडा का कथन है: 'Translation is far more than a Science] it is also a Skill and in the ultimate analysis fully satisfactory translation is always an Art. 'अर्थात् अनुवाद विज्ञान से बढ़कर है, वह कौषल भी है और अन्तिम विष्लेशण में पूर्णतः सन्तोशजनक अनुवाद हमेषा एक कला रहा है। परन्तु डॉ. नगेन्द्र अनुवाद को एक स्वतंत्र विधा मानते हैं। उनका कहना है : 'अनुवाद पारिभाशिक अर्थ में न विज्ञान है और न कला। इसके अतिरिक्त उसे निष्चित रूप से शिल्प भी कहना तर्कसंगत नहीं होगा। वास्तविक स्थिति यह है कि आधार विषय के अनुसार अनुवाद में इन तीनों के ही तत्त्वों का यथानुपात समावेष रहता है। साहित्यिक अनुवाद विशेष रूप से काव्यानुवाद का अन्तर्भाव जहाँ कला की परिधि में ही हो जाता है, वहाँ वैज्ञानिक तथा शास्त्रीय अनुवाद में विज्ञान के आधार तत्त्वों का प्राधान्य रहता है जबकि शिल्प का प्रयोग प्रायः सर्वत्र ही मिलता है। इस प्रकार अनुवाद एक स्वतंत्र विधा है।' निश्कर्श के रूप में कहा जा सकता है कि अनुवाद में कला, विज्ञान और शिल्प तीनों विधाओं के तत्त्व अंशतः विद्यमान हैं। दूसरे शब्दों में, अनुवाद के विश्लेषण में वैज्ञानिकता है, उसकी सिद्धि में कलात्मकता जिसके लिए आवश्यकता होती है शिल्पगत कौषल की।

अनुवाद के प्रकार

साहित्य अनुवाद व उससे जुड़ी समस्याएँ

स्रोत भाषा में लिखित साहित्य को लक्ष्य भाषा में अनुवाद करने को साहित्यिक अनुवाद कहते हैं। साहित्य की विधाओं में कविता, लघुकथा, कहानी, उपन्यास, अकांकी, नाटक, प्रहसन (हास्य), निबंध, आलोचना, रिपोर्ताज, डायरी लेखन, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, गल्प (फिक्शन), विज्ञान कथा (साइंस फिक्शन), व्यंग्य, रेखाचित्र, पुस्तक समीक्षा या पर्यालोचन, साक्षात्कार शामिल हैं। साहित्यिक कृतियों का अनुवाद, सामान्य अनुवाद से उच्चतर माना जाता है। साहित्यिक अनुवादक कार्य के सभी रूपों जैसे भावनाओं, सांस्कृतिक बारीकियों, स्वभाव और अन्य सूक्ष्म तत्वों का अनुवाद करने में भी सक्षम होना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं कि साहित्यिक अनुवाद वास्तव में संभव नहीं हैं।

कहा भी गया है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। बस यही वह चीज है जो साहित्य अनुवाद को बेहद उत्तरदायी और कठिन कर्म बना देती है। किसी भी एक साहित्यिक कृति का उसकी मूल भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय कितनी ही सावधानियां बरतनी पड़ती हैं। ये सभी सावधानियां सांस्कृतिक भिन्नताओं के चलते समस्याओं का रूप ले लेती हैं। क्योंकि सांस्कृतिक भिन्नता को समाप्त करने के लिए भाषा को मूल रचना की भाषा में व्यक्त प्रतीकों, भावों और उन अनेक विशेषताओं को सटीक तरीके से लक्ष्य भाषा में उतारना होता है और साथ ही यह ध्यान रखना होता है कि लक्ष्य भाषा में उतरी कृति पढ़ने वाले को सहज और आत्मीय लगे।

हम सभी समझ सकते हैं कि यह आसान नहीं है, कारण बहुत सारे हैं, आइये उनकी विवेचना करते हैं:

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202009

काव्यानुवाद की समस्याएँ

काव्यानुवाद एक प्रकार का भावानुवाद है जिसे अधिकांषतः कवि ही करते हैं, क्योंकि इसके लिए कवि की संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है। इसी कारण से तटस्थता बनाए रखना एक बड़ी समस्या हो जाती है। काव्य में शब्द के स्थान पर प्रतीकों का उपयोग बहुतायत में होता है। इस संकृति के प्रतीक को दूसरी संस्कृति के प्रतीक के रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता है कारण सांस्कृतिक भिन्नता है।

नाट्यानुवाद की समस्याएँ

मंचनीयता की पूर्व–शर्त से जुड़ी यह विधा कभी–कभी काव्यानुवाद जितनी ही जटिल हो जाती है क्योंकि नाट्य विधा का मंचन पक्ष इसे बहुआयामी बना देता है। नाटक का लक्ष्य पूरा हो इसके लिए लेखन से बाहर के कई वाह्य तत्व जैसे अभिनेता और निर्देशक भी इसमें शामिल होते हैं। मंचनीयता को पूरा करने के लिए नाटककार को रंगमंच की आवश्यकताओं को दिमाग में रखना पड़ता है। यह इसकी रचना प्रक्रिया को जटिल बना देता है।

नाटक का अनुवाद करने में उसकी सावादात्मक प्रकृति को बनए रखना एक समस्या है क्योंकि उसके पात्रों के समस्त गुणों को लक्ष्य भाषा के पात्रों में ठीक उसी तरह से दिखना चाहिए। समस्या यह है कि वर्ग विषेश का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र संस्कृति की भिन्नता के प्रतीक होते हैं और उनको मूल रचना से लक्ष्य रचना में पुर्नजन्म लेना होता है। यह अनुवादक के लिए समस्याजनक हो जाता है क्योंकि उदाहरण के लिए भारतीय परिवश में राजा हरिश्चन्द्र के डोम वाले चरित्र को दर्शाने के लिए अंग्रेजी में उसी प्रकार का कोई कार्य प्रतीक खोजना होगा।

कथानुवाद की समस्याएँ

कविता तथा नाटक की ही तरह कहानी, उपन्यास अथवा कथा साहित्य में सर्जना का स्तर किसी भी तरह से हल्का या कम नहीं होता है, इसीलिए इसका अनुवाद किसी भी तरह से सहज या सरल क्रिया नहीं होती है। कथा का अपना एक विशिष्ट प्रारूप होता है। इसमें साहित्य की अन्य विधाओं के गुण भी अंतर्निहित होते हैं। जिस तरह से नाटक के पात्र अपनी संस्कृति व पृष्ठभूमि का प्रतिनिधित्व करते हैं।

कथा साहित्य में पूरे पाठ को एकल इकाई के रूप में प्रस्तुत व गर्हण करने से ही उसका अर्थ स्पष्ट होता है। अर्थात संपूर्ण पाठ एक श्रंखला जैसा होता है जो आपस में गुथी होती है और प्रत्येक कड़ी अगली या पिछली कड़ी को अर्थ प्रदान करती है। इस तालमेल को अनुवाद मे कायम रख पाना एक समस्या हो सकती है।

तकनीकी अनुवादव उससे जुड़ी समस्याएँ

तकनीकी अनुवाद (Technical translation) एक विषेश प्रकार का अनुवाद है जिसमें तकनीकी विषयों से सम्बन्धित दस्तावेजों का अनुवाद करना होता है। उदाहरण के लिये स्वामी का मनुअल (owner's manuals), प्रयोक्ता मार्गदर्शिका (user guides) आदि। इसमें तकनीकी विषयों के षोधपत्र, तकनीकी पुस्तकों का अनुवाद आदि भी सम्मिलित है। इस प्रकार के अनुवाद की मुख्य विशेषता इसमें विशिष्ट पारिभाशिक शब्दावली का होना है। इसके अतिरिक्त सम्बन्धित विषय की जानकारी भी वांछित है अन्यथा कई जगह अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

तकनीकी अनुवाद के लिये अनुवाद स्मृति (ट्रांसलेषन मेमोरी) बहुत उपयोगी है क्योंकि इसमें प्रयुक्त शब्दावली सीमित होती है, दोहरायी गयी होती है, तथा उसमें एकरूपता (कांसिस्टेन्सी) होती है। तकनीकी अनुवाद का तकनीकी संचार से घनिष्ट सम्बन्ध है।

अनुवाद की उपादेयता

'अनुवाद' को प्रायः कुछ विद्वान कला, शिल्प या विज्ञान मानते रहे हैं. भोलानाथ तिवारी के अनुसार यह अंशतः कला, अंषतः शिल्प और अंषतः विज्ञान है।आज अनुवाद को कला, शिल्प या विज्ञान मानने की बहस निरर्थक हो गई है। आधुनिक अनुवाद शास्त्र अनुवाद प्रक्रिया को एक वैज्ञानिक प्रक्रिया मानता है। अतः अनुवाद एक प्रकार का विज्ञान है।अनुवाद को केवल विज्ञान मान लें या फिर कला और शिल्प तब भी अनुवाद की उपदेयता अपने–आप सिद्ध हो जाती है। अनुवाद कला और शिल्प के रूप में एक ओर जहाँ लक्ष्य भाषा के पाठक के मनोरंजन का साधन बनता है वहीं दूसरी ओर मूल पाठ के लेखक के मन की अभिव्यक्ति को लक्ष्यभाषा के पाठक के समक्ष प्रस्तुत करने का उपयुक्त माध्यम भी है। इससे लक्ष्यभाषा के पाठक का मनोरंजन और ज्ञानवर्धन, दोनों हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त अनुवाद को विज्ञान मान लेने से वह मानव जीवन की प्रगति का एक संवाहक के रूप में स्वीकार्य हो जाता है। अतः अनुवाद कला, शिल्प और विज्ञान के रूप में मानव जाति की मानवीय संवेदना के विकास और ज्ञानवर्द्धन का महत्वपूर्ण आधार भी है।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि अनुवाद का कार्य एक भाषा की आत्मा (अर्थ) को दूसरी भाषा की काया में प्रवेष करने के समान है। अनुवाद दो भाषाओं या दो से अधिक भाषाओं में किया जाता है। इसलिए भाषा भिन्नता के साथ ही भाषा विशेष की सामाजिक, सांस्कृति और षैलीगत विषेशताओं को समझना अनिवार्य होता है। एक अच्छा अनुवादक इन सभी पहलुओं पर ध्यान देता है और अपनी कार्ययित्री एवं भावयित्री प्रतिभा का उपयोग करके सफल अनुवाद करने का प्रयास करता है। इसी कारण विद्वानों ने अनुवाक कार्य को पुनः सृजन और अनुवादक को सृजनकर्ता माना है। अनुवाद की प्रक्रिया से गुजरते समय अनुवादक भाषाविज्ञान की शाखाओं की सहायता लेता है। इन शाखाओं के अंतर्गत भाषा के अध्ययन–विश्लेषण के लिए एक कालिक भाषाविज्ञान, ऐतिहासिक भाषाविज्ञान, समाज भाषाविज्ञान, तुलनात्मक और व्येतिरेकी भाषाविज्ञान आदि के सिद्धांतों का अनुप्रयोग किया जाता है। अतः स्पष्ट है कि अनुवाद में भी इन शाखाओं के सिद्धांतों का अनुप्रयोग करते समय भाषाविज्ञान की अन्य शाखाओं का उसमें समावेष हो जाता है। अनुवादक इन शाखाओं के सिद्धांतो से कभी नए शब्द गढ़ता है, कभी उपयुक्त शब्दार्थ–वाक्य का चयन करके लक्ष्य भाषा में मूल भावार्थ को प्रतिश्ठित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अनुवाद विज्ञान की भूमिका – के.के गोस्वामी
2. अनुवाद विज्ञानः सिद्धान्त एवं प्रविधि – भोलानाथ तिवारी
3. अनुवाद विज्ञान और सेप्रेशण – डॉ. हरी मोहन।

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202009